विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 08-12-2021

वर्ग अष्टम शिक्षक -राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

द्वंद समास।

अहश्च रात्रिश्च = अहोरात्रः

कुशश्च लवश्च = कुशीलव

घौश्च भूमिश्च = द्यावाभूमी

अग्निश्च सोमश्च = अग्नीसोमी

अहश्च निशा च = अहर्निशम्

द्यश्च पृथिवीय = द्यावापृथिव्यौ

द्वौ वा त्रयौ वा = द्वित्रा

पञ्च वा षड् वा = पञ्चषाः

मित्रश्च वरूणश्च = मित्रावरूणौ

सूर्यश्च चन्द्रमा च = सूर्याचन्द्रमसी

अग्निश्च वायुश्च = अग्निवायू

उदकं च अवाक् च उच्चावयम्

वाक् च मनश्च = वाङ्मनसः

गावश्च अश्वाश्च = गवाश्वम्

द्वन्द्व समास हिन्दी में

इस समास में दो पद होते हैं तथा दोनों पदों की प्रधानता होती है। इनका विग्रह करने के लिए "और, एवं, तथा, या, अथवा" शब्दों का प्रयोग किया जाता है। द्वंद्व समास में योजक चिन्ह

(-) और 'या' का बोध होता है। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। विग्रह करने पर बीच में 'और' / 'या' का बोध होता है ।

परिभाषा

द्वन्द्व समास में समस्तपद के दोनों पद प्रधान हों या दोनों पद सामान हों एवं दोंनों पदों को मिलाते समय "और, अथवा, या, एवं" आदि योजक लुप्त हो जाएँ, वह समास द्वंद्व समास कहलाता है।